Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण: एक विवेचना

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,
Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका :-

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। भारत की तरह विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी प्रारम्भ से ही शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से विभिन्न कौशलों का विकास किया जाता है। इसलिए जीवन को कौशलों से जीने के लिए जरूरी है। शिक्षा का उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए आज के युग में छात्र आगे जा रहे हैं।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करता है। शिक्षा समाज, राष्ट्र व सभ्यता के उत्थान के लिए अनिवार्य है। शिक्षा को विपथगा की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि एक ओर यह अपने मूल उद्देश्यों–बालकों को शिक्षित करने का काम करती है, तो दूसरी ओर यह समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप अपने को ढाल लेती है।

प्राथमिक स्तर शिक्षा व्यवस्था :-

प्राथमिक शिक्षा का वास्तविक अर्थ है शिक्षा का प्रारम्भ। अतः प्रारम्भिक शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर है जिसमें बालक विद्यालय में प्रवेश पाकर वास्तविक विधिवत रूप से अध्ययन प्रारम्भ कर देता है। प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बालक शिक्षारूपी विशाल भवन में प्रवेश पाता है। यहीं से उस बालक की शिक्षा प्रारम्भ होती है और यही शिक्षा उसकी शिक्षा का प्रथम सोपान है। इसी शिक्षा के दौरान बालक किसी विद्यालय में प्रवेश पाकर विधिवत् रूप से शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ करता है।

प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसकी तुलना उस प्रकाश से की जा सकती है जो जीवन के अन्धकार को दूर कर बालक को चहुँमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम होता है। भारत वर्ष की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा का सर्वमान्य रूप से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का प्रथम सोपान होती है। जैसा कि नाम से अनुमान हो जाता है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली की यह प्रथम सीढ़ी है, जिसे प्राथमिक शिक्षा के रूप में भी जाना जाता है। यह शिक्षा की वह बुनियाद है, जिस पर बालक की सम्पूर्ण शिक्षा

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

रूपी इमारत का निर्माण होता है। यह बुनियाद शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होती है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक योग्यताओं को भी सम्मिलित किया जाता है।

स्कूल का अर्थ :-

स्कूल शब्द की उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द से हुई है। इस शब्द का अर्थ है–'अवकाश'। यद्यपि स्कूल का यह अर्थ विचित्र सा लगता है, परन्तु यह वास्तविकता है कि प्राचीन यूनान में इन अवकाश के स्थानों को ही स्कूल के नाम से सम्बोधित किया जाता था। अवकाश शब्द का अर्थ है 'अलग विकास' अथवा 'शिक्षा'। शनैः-शनैः ये अवकाशालय ऐसे स्थान बन गए जहाँ पर शिक्षक किसी निश्चित योजना के अनुसार एक निश्चित पाठ्यक्रम को निश्चित समय के भीतर समाप्त करने लगे। इस प्रकार आधुनिक युग में स्कूल का एक भौतिक अस्तित्व होता है, जिसकी चारदीवारी में बालकों को शिक्षा प्रदान की जाती है।

स्कूलों के प्रकार

1. सरकारी स्कूल

सरकारी स्कूलों को सरकार द्वारा चलाया जाता है। इन स्कूलों को समय-समय पर ग्रांट और अनेक प्रकार के योगदान दिए जाते हैं। शिक्षा को तीन भागों में बाँटा गया है–केन्द्रीय, राज्य और जिला स्तर पर।

2. गैर सरकारी स्कूल(प्राइवेट)

प्राइवेट स्कूल निजी व्यक्ति द्वारा चलाए जाते हैं। इन स्कूलों को सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त होती है। प्राइवेट स्कूलों में बच्चों को हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से अधिक पढ़ाया जाता है।

3. अर्द्ध सरकारी स्कूल

अर्द्ध सरकारी स्कूलों को सरकार द्वारा खोला जाता है। अर्द्ध-सरकारी स्कूल को ग्रांट सरकार देती है और किसी संस्था द्वारा भी चलाए जाते हैं। इन स्कूलों को संस्थान स्कूल भी कहा जाता है। इन स्कूलों को चलाने में पंचायत का भी काफी योगदान रहता है।

अध्ययन की आवश्यकता

सरकारी स्कूलों में वर्दियाँ, पुस्तकें निःशुल्क दी जाती हैं। जबकि प्राइवेट स्कूलों में महंगे दामों पर बाज़ार में निश्चित दुकानों पर वर्दियाँ, पुस्तकें आदि दिलवाकर अभिभावकों का आर्थिक शोषण किया जाता है तथा लाभ कमाया जाता है। सरकारी स्कूल में इतनी सुविधाएँ दी जा रही हैं लेकिन फिर भी लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेज रहे हैं। जिन अभिभावकों की आर्थिक स्थिति कमजोर है, वे भी अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाना चाहते हैं। सरकारी स्कूलों के बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दिया जाता, क्योंकि सरकारी स्कूलों में शिक्षकों पर बहुत बोझ होता है। जैसे शिक्षकों को जनगणना तथा चुनाव योजना में लगा दिया जाता है, जिस कारण शिक्षक बच्चों के शिक्षण हेतु उचित ध्यान नहीं दे पाते। ऐसे और बहुत से कारण हैं, जिनकी वजह से अभिभावक बच्चों को निजी स्कूलों में भेजना चाहते हैं। इन्हीं कारणों का अध्ययन करने व उनके निवारण का प्रयास करने हेतु अनुसंधानकर्ता ने इस समस्या **का चुनाव किया जाता है ।**

समस्या कथन

"प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण: एक विवेचना।"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :-

1. प्राथमिक स्तर

प्राथमिक शिक्षा का वास्तविक अर्थ है कि शिक्षा का प्रारम्भ। अतः प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर है जिसमें बालक विद्यालय में प्रवेश पाकर वास्तविक विधिवत रूप से अध्ययन प्रारम्भ कर देता है। प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बालक शिक्षा रूपी विशाल भवन में प्रवेश पाता है। यहीं से उस बालक की शिक्षा प्रारम्भ होती है।

2. सरकारी स्कूल

सरकारी स्कूल वह होता है जो सरकार द्वारा बालकों को शिक्षित करने के लिए खोले जाते हैं। इसके अन्तर्गत सभी वर्गों के बच्चों को शिक्षित किया जाता है।

3. प्राइवेट स्कूल

प्राइवेट स्कूल वह होता है जो किसी निजी व्यक्ति, प्रशासन, संगठन द्वारा चलाए जाते हैं।

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन।
2. शहरी क्षेत्र में शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन।
3. ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन।
4. शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन।
5. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।
6. ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।
7. ग्रामीण क्षेत्र का शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र का अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।
8. ग्रामीण क्षेत्र का अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र का शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।
9. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।
10. शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

1. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

2. **ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**
3. **ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित और अशिक्षित वर्ग एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाय प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

अध्ययन की सीमाएँ

1. **यह अध्ययन केवल फतेहाबाद जिले के रतिया क्षेत्र तक सीमित रखा गया।**
2. **शोध कार्य में ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र का चयन किया गया।**
3. **शोध कार्य ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र के सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के छात्रों के अभिभावकों तक सीमित रखा गया।**

अध्ययन की अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में एक शॉर्ट केस अभिकल्प का चयन किया गया, क्योंकि इस अध्ययन में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले सरकारी एवं निजी विद्यार्थियों के दो समूहों के अभिभावकों का चयन किया गया है। इन समूहों की तुलना की गई है और विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा निजी स्कूलों को प्राथमिकता देने के कारणों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने रतिया ब्लॉक के पांच प्राथमिक सरकारी विद्यालय एवं पांच निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों को जनसंख्या के रूप में चुना गया। जिसमें से यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा 200 अभिभावकों को नमूने के रूप में चुना गया।

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

अध्ययन नमूना

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने पांच सरकारी व पांच निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से क्रमशः 100 **ग्रामीण और** 100 **शहरी अभिभावकों को नमूने के रूप में लिया गया। उन अभिभावकों को अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार** 50 **शिक्षित और** 50 **अशिक्षित ग्रामीण क्षेत्र के तथा** 50 **शिक्षित और** 50 **अशिक्षित शहरी क्षेत्र के अनुसार लिया गया।**

सांख्यिकी विधि

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने निम्न सांख्यिकीय आंकड़ों का प्रयोग किया है वह अग्रलिखित प्रकार से है-

मध्यमान :

मध्यमान का प्रयोग विभिन्न कारकों पर अंकों के वितरण की प्रवृत्ति को जाने के लिए किया जाता है। इसका सूत्र निम्न है:-

M = **माध्य**

Z = **योग**

X = **वितरण में समंक**

N = **समकों की संख्या**

मानक विचलन :

विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक निकाला गया। मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहते हैं। यह वितरण के औसत से सब विचलन के वर्गों के वर्गमूल का औसत है।

$$SD = \sigma = \frac{\sqrt{\sum d^2}}{N}$$

σ = **प्रतिदर्श का मानक विचलन**

d = **यथा प्राप्त आंकड़ों का मध्य बिंदु से विचलन**

N = **मापों की संख्या**

$\sqrt{\sum d^2}$ = **प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल**

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

(ख) टी टैस्ट (T-Test):

दो समूहों की तुलना करने के लिये टी-टैस्ट लगाया गया है।

$$\text{T - Test} = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\dfrac{\sigma_1^2 + \sigma_2^2}{N1 + N2}}}$$

M_1 = मध्यमान पहले ग्रुप का

M_2 = मध्यमान दूसरे ग्रुप का

σ_1 = प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का

σ_2 = प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का

N_1 = पहले ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

N_2 = दूसरे ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

परिणाम :

1. **ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के अध्ययन में पाया गया कि इनका प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांकों का औसतमान** 15.58 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 78.20 **है। और प्रतिशतांक** 60% **पाया गया। इसलिए अध्ययनकर्ता ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग के अभिभावकों का रूझान प्राइवेट स्कूलों की तरफ अधिक है।**
2. **शहरी क्षेत्र में शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के अध्ययन में पाया गया कि इनका प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांकों का औसतमान** 20.56 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.78 **है। और प्रतिशतांक** 80% **पाया गया। इसलिए अध्ययनकर्ता ने पाया कि शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग के अभिभावकों का रूझान प्राइवेट स्कूलों की तरफ अधिक है।**
3. **ग्रामीण क्षेत्र में अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के अध्ययन में पाया गया कि इनका प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांकों का औसतमान** 14.04 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.49 **है। और प्रतिशतांक** 56% **पाया गया। इसलिए अध्ययनकर्ता ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग के अभिभावकों का रूझान प्राइवेट स्कूलों की तरफ अधिक है।**

4. **शहरी क्षेत्र में अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के अध्ययन में पाया गया कि इनका प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांकों का औसतमान** 19.02 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 79.62 **है। और प्रतिशतांक** 76% **पाया गया। इसलिए अध्ययनकर्ता ने पाया कि शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग के अभिभावकों का रुझान प्राइवेट स्कूलों की तरफ अधिक है।**
5. **ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग का औसतमान** 15.58 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 78.20 **है और शहरी क्षेत्र के षिक्षित वर्ग का औसतमान** 20.56 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.78 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.31 **है तो सारणी मान से कम है ।अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता** 99% **विश्वास के साथ कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**
6. **ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 14.04 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.49 **है और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 19.02 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 79.62 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.13 **है तो सारणी मान से कम है ।अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता** 99% **विश्वास के साथ कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**
7. **ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग का औसतमान** 15.58 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 78.20 **है और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 19.02 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 79.62 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.13 **है तो सारणी मान से कम है ।अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता** 99% **विश्वास के साथ कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

8. **ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 14.04 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.49 **है और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग का औसतमान** 20.56 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.78 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.01 **है तो सारणी मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता** 99% विश्वास **के साथ कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**
9. **ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र का शिक्षित वर्ग का औसतमान** 15.58 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 78.20 **है और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 14.04 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.49 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.09 **है तो सारणी मान से कम है।**

   अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता 99% विश्वास **के साथ कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**
10. **शहरी क्षेत्र का शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग का औसतमान** 20.56 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.78 **है और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग का औसतमान** 19.02 **है तथा प्रमाणिक विचलन** 77.62 **हैं। इन दोनों का 'टी' मान** 0.09 **है तो सारणी मान से कम है।**

    अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत करते हुए अध्ययनकर्ता 99% विश्वास **के साथ कह सकता है कि शहरी क्षेत्र का शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता यह कह सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दी जाती है। अध्ययनकर्ता के द्वारा अभिभावकों का प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का मापन किया गया तो पाया कि शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दी जाती है। अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दी जाती है। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दी जाती है। अतः शोधकर्ता ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्रश्नावली करवाने के बाद अभिभावकों का मापन किया गया और पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देने में कोई अन्तर नहीं है। निष्कर्ष में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शोधकर्ता ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के अशिक्षित वर्ग और शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देने में अन्तर नहीं है। अध्ययनकर्ता ने देखा कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देने में कोई अन्तर नहीं है।

अतः निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता ने पाया कि शहरी क्षेत्र के शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की बजाए प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इसका कारण यह है कि प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता इसलिए दी जाती है क्योंकि प्राइवेट स्कूलों में बच्चों के शिक्षण कार्य के प्रति अधिक ध्यान दिया जाता है। प्राइवेट स्कूलों के अनुशासन को अधिक महत्व दिया जाता है। सरकारी स्कूलों में बच्चों के शिक्षण कार्य के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता, ना ही अनुशासन को महत्व दिया जाता है। प्राइवेट स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास की तरफ अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि सरकारी स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। प्राइवेट स्कूलों में बच्चों की व्यक्तिगत रूप से देखभाल की जाती है और समय-समय पर बच्चों की जानकारी अभिभावकों को दी जाती है, जबकि सरकारी स्कूलों में बच्चों की जानकारी नहीं दी जाती।

अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अभिभावक प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता इसलिए देते हैं क्योंकि प्राइवेट स्कूलों में बच्चों का व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखा जाता है जबकि सरकारी स्कूलों में बच्चों का व्यक्तिगत ध्यान नहीं रखा जाता। प्राइवेट स्कूलों में सुविधाएं अधिक दी जाती हैं।

Web of Science ResearcherID JTT-2394-5702
International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 8 Issue 5, May 2021 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

शैक्षिक निहितार्थ :-

1. **यह अध्ययन सरकारी व प्राइवेट स्कूलों के अध्यापकों के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने के लिए उपयोगी है।**
2. **यह अध्ययन प्राथमिक स्तर की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए उपयोगी है।**
3. **यह अध्ययन माध्यमिक स्तर की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए उपयोगी है।**
4. **यह अध्ययन छात्रों के लिए उपयोगी है, क्योंकि अध्यापकों से अपने शिक्षण कार्य का लाभ उठा सकते हैं।**
5. **यह अध्ययन शिक्षा के प्रति झुकाव को जानने के लिए उपयोगी है।**
6. **यह अध्ययन प्राइवेट स्कूलों की प्राथमिकता जानने के लिए उपयोगी है।**
7. **यह अध्ययन सरकारी स्कूलों की कमियों को जानने के लिए उपयोगी है, ताकि सरकारी स्कूलों में सुधार किया जा सके।**

आगामी शोध के लिए सुझाव :-

1. **प्राथमिक स्तर पर अभिभावकों द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
2. **माध्यमिक स्तर पर अभिभावकों द्वारा प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
3. **उच्च स्तर पर अभिभावकों द्वारा प्राइवेट कॉलेजों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
4. **डी.ए.वी. स्कूलों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
5. **नवोदय विद्यालयों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
6. **केन्द्रीय विद्यालयों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**
7. **आरोही विद्यालयों को प्राथमिकता दिए जाने का अध्ययन किया जा सकता है।**